श्रीगणेशायनमः

हलानदिकीकोवास
को १८ होईगा

~~राकैकलितामस~~

रानैकलिपत मानसं हे मजेले ~~[illegible]~~

कंवीकोस्कोरोरी
पकाउने नमाकेपटी
डीपतनकोवी
उकुसारा

पेटकोवारीमानेदुकावान

अदुवाकेरसे १मुठी ठेजर १५ दाना ततारईवाले

पानवाली

मुकुनेल दानाकोजोडा १०
तुलसीकाजोड़ —— १०
धातुतापुकोपान —— १
अनकावोजीरादाना २५
मुरेकोसे —— १५
अठारसकामुद्वीवीसा
~~पानीलोरस गाल मात्रा १~~

काडामाके
कानोधन राकोडेदान
गमनो भासरा

अरकोमा [illegible] कोमोतार गमहाकी पुंपडा [illegible]
औकडुगडमने कोड

श्रीईश्वरमाओसधी

कैपटकारीतोरुसुठेलारे ३ गलोतिरे ३ ईडुडोधु
गरीवीपवाचपाजु २ १तोला पोओ पादिमा १६मु०
वाटसुठीपानीहालीपकाउनु १मुठीवाकीरसब डवरोदि३
वछमने पा१ वीपामइहरं लोस्पाहान पीश्वारा १मुठीरवानु
उपरातिच छमने २ लाल समके पीपलाधरायोके चुरनी
मीलाई वैलधा स्ङीवमोजी गरीपकासकै १मुठीश्वाछारवानु
साठीपरारी १ [illegible]
पुरवीपरारी -१
पीठी - - १
कैपटकारी -१
गोखुर - १
हरो - १
रोहिरगी
ई१ औसधर ३ पुरगारी मागामिलाई आदातोला
ओसधीमा २माना ~~[illegible]~~ पानीपकाई १मुठीपानीवा
मारीकीजवारवार २मासार पीपला पुरी २मासा मीलाई
[illegible] कापीठनेगजु स्सवाटपाईदादे रवि [illegible]

ॐ गुरुको आग्यान ले पुर्व दोलखा वै थोरह
ने दुलखा भीमजगा हात सो चार बारा जगाउँ:
हात छुरी फ़ा वान जगाउँ: हात चौमुल बारा जगाउँ
हात अग्नी वान जगाउँ: हात विजुली वान जगाउँ
रगत गोला जगाउँ: मासे गोला जगाउँ हाला ला
हलु लु: स्वत: स्वत महा धरत जुजु निर वाचा ॐ
गुरुकि वाचा ।।१०८।। फ़ेसमैब ले सरमाउथा
ई लाउने।

ॐ गुरुगोम जोगीजोगी ह्रार्ई ईश्वर सात सरमे
सरमा गुरगुरु हेका ठेलकाराकुकुरु ॐ न्यागत
न्यास नोंनोंसत उवाचा ।। धा ७ समातन मेचहो
पहेलो अशेता टो।। सर्फाउठाने-लगाउने सर्मोको।।
औकले।।
सुनैलामा फोराउ हामरो सात स्वाहा ।।धा ७।।
मेतो अशेता फुको हानो दिन छुटाउने।। ।।

श्री गणेशायनम: ।। हरि ॐ तत्सत्‌ ३ विष्णु ३ देस काल संकी
र्तीस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्य राजभय अग्नीभय चोरभ
य निवारणार्थे डोकिनि सांकिनि भूत प्रेत ब्रह्म पिसाच सांत्या
र्थग नवग्रहाणां दसा अंतर दसा वहिर्प्र पुवेस सांत्यार्थे मम
महाविद्या प्राप्त्यर्थे जपेविनियोग ।। ॐ महाविद्या प्रव
स्यामि महा देवेन निर्मितं चीनमन राज स्पेनमात्रेण
हादन-दीनि ।। उत्तमं सर्वविद्यानां सर्वलोकवसंकरी ।।
सर्वविद्या प्रकासिनी सर्व मंगलदाइनी ।। ॐ कल का
री कलकलकरी योत्रकरी यसकरी ध्यानाकरी र
लकरी तुष्टी करी पुष्टीकरि वृद्धीकरि प्रज्ञाकरी स
र्वशत्रु क्षयकरि उच्छाहबलवर्द्धिनि सर्वाङ्ग वस्त्र
कर्वी-च्यनि ।। सर्वग्रह उच्चाटनि दुष्ट मित्र भय वर्धि
नी आयुरारोग्य मैश्वर्या विवर्धीनी सर्व भुत तम्भ
निद्रा निर्मोहिनि सर्व कृत्या आकर्षिणी सर्वलोकव
शीकरी सर्वराजवशीकरी सर्वजीव प्रभेदीनी सर्वग्रह उ
च्याटनि ।। एकाहिकं द्वाहिक त्राहिक चतुर्थ हिकं
न्वाहिकं ष षष्ठाहिकं सप्ताहिकं ।। अर्ध मासि
घ मासिकं साम्वत्सरिकं वार्सिकं प्रतीकं लोकस्मो
प्रसुती कैकदचौकी ।। कुष्ट रोग पाण्डु रोग मुखरोग दं

-तरोग वर्गा प्रमेह गुल्म विषाघ्रस्फोटकादि भो विना
साय स्वाहा॥ ॐ वेलाज्वर त्रिरात्रिज्वर संततिज्वर
वेलिज्वर अग्निज्वर राक्षसज्वर भूतज्वर पिसाचज्व
र प्रेतज्वर द्रिष्टीज्वर स्फोटज्वर तिव्रज्वर मातंज्व
र मात्रिज्वर मायाग्रयं तिवारी कोढ वीना साय स्वहा।
ॐ असीमुल कुक्षिशुल वक्षिशुल कर्णिशुल पुराग
शुल दंतशुल गंधशुल गलशुल शीरशुल शिरा
र्द्धशुल पादार्द्धशुल पादशुल सर्वांगेशुल वीना
साये स्वाहा॥ सर्वव्याधि वीनासाय स्वाहा॥ ॐ स
र्वशत्रु विनासाय स्वाहा॥॥ ॐ आत्मा रक्ष परमात्मा
रक्ष ॐ अग्नि रक्ष प्रेताग्नौ रक्ष तोसिपालां केवीधा
मि॥ ॐ इं इं देहीनि ईं ईं देहीनी उं उं देहीनि ॐ सरस्वर
प्रज्ञ ठराठ॥ ॐ विश्वविश्व विश्व ठराठ ॐ ज्वलन ज्वलन ठ
राठ ॐ भेजनी भंजनि ठराठ स्त्रिठराठ प्रहर प्रहार ठराठ ॐ
ठराठ॥ ॐ हीलि हिली मो हां ठराठ ॐ नृत्य नृत्य वो भ्र
क्व सर्वांगीनि हेशिनी हेस स्वेनी ॐ त्रिशुलिनी ठं स्त्री
नि रक्ष रक्ष स्वहा॥ अथातो विजमेव प्रवक्ष्यामि॥ ॐ हुं
स्वहा ॐ हुं हुं स्वहा ॐ हुं स्वहा ॐ ही ही स्वहा॥ ॐ
हुं स्वहा ॐ हुं हुं स्वहा ॐ हैं स्वहा ॐ है है स्वहा॥

ॐ हैं स्वहा ॐ हौं हौं स्वहा ॐ हं स्वहा हं हं स्वहा ॐ के
हा ॐ कों कों स्वहा ॐ किं स्वहा ॐ किं किं स्वहा ॐ कूं स्वहा
ॐ कूं कूं स्वहा ॐ कैं स्वहा ॐ कैं कैं स्वहा ॐ कौं स्वहा ॐ कौं
कौं स्वहा ॐ कं स्वहा ॐ कं कं स्वहा ॐ हुं हुं फट् स्वहा ॐ
हीं हीं ॐ क्रों क्रों फट् स्वहा ॐ क्रों क्रों फट् स्वहा ॐ हुं हुं
क्रों क्रिं क्रों फट् स्वहा ॐ भ्रों क्रीं दं हं फट् स्वाहा ॐ पुं पुं
हुं फट् स्वहा ॐ हुं क्रों श्रीं हं सं भ्रों नं पुं फट् स्वहा ॐ व्रों
व्रों मं सर्वाज्य स्वाहा॥ इति अष्टदेवता होम॥ अथ रक्षा
मेद॥ ॐ कं स्वहा ॐ कं कं स्वहा ॐ खं स्वहा ॐ खं खं स्वाहा
ॐ गं स्वहा ॐ गं गं स्वहा ॐ घं स्वाहा ॐ घं घं स्वाहा ॐ
ङं स्वहा ॐ ङं ङं स्वहा ॐ चं स्वहा ॐ चं चं स्वाहा॥ ॐ
छं स्वहा ॐ छं छं स्वहा ॐ जं स्वाहा ॐ जं जं स्वहा ॐ झं स्वा
हा ॐ झं झं स्वाहा ॐ ञं स्वाहा ॐ ञं ञं स्वाहा ॐ टं स्वहा
ॐ टं टं स्वहा ॐ ठं स्वहा ॐ ठं ठं स्वाहा ॐ डं स्वहा ॐ
डं डं स्वहा ॐ ढं स्वाहा ॐ ढं ढं स्वहा ॐ णं स्वहा ॐ णं
णं स्वहा ॐ तं स्वहा ॐ तं तं स्वाहा ॐ थं स्वहा ॐ थं थं
स्वहा ॐ दं स्वहा ॐ दं दं स्वहा ॐ धं स्वहा ॐ धं धं स्व
हा ॐ नं स्वहा ॐ नं नं स्वाहा ॐ पं स्वहा ॐ पं पं स्वहा ॐ फं
स्वहा ॐ फं फं स्वहा ॐ बं स्वहा ॐ बं बं स्वहा ॐ भं स्वा

हा ॐ भँ भँ स्वहा ॐ मँ स्वहा ॐ मँ मँ स्वाहा ॐ धँ स्वहा यँ यँ स्वा
हा ॐ रँ स्वहा ॐ रँ रँ स्वाहा ॐ लँ स्वहा ॐ लँ लँ स्वाहा ॐ वँ वँ
स्वाहा ॐ शँ शँ स्वाहा ॐ शँ स्वाहा ॐ शँ षँ स्वाहा ॐ षँ स्व
हा ॐ षँ षँ स्वाहा ॐ सँ स्वाहा ॐ सँ सँ स्वहा ॐ हँ स्वाहा
ॐ हँ हँ स्वाहा ॐ यँ स्वहा ॐ यँ यँ स्वहा ॐ ॐ स्वाहा ॐ
ॐ ॐ स्वाहा ॐ क्षँ स्वहा ॐ क्षँ क्षँ स्वाहा ॐ ज्ञँ स्वाहा ॐ
वँ वँ स्वहा॥ इति होम मंत्र॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय
य॥ भैरवाय॥ गणेश्वराय॥ दुर्गाय॥ महा सो नीक
राय भुत प्रेत पिसाच गुह्यसाम्न यु राक्षस वेताल सर्व दृष्टी
क॥ भयं वी नासाय स्वाहा॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रँ फट्
स्वाहा॥ पुराण पुरुषोच्चारन सर्व होम॥ ॐ गायत्री पु
राय धारिनी उल्क मुखि नागमुखी सिरोपरी धारीनि
स्वाहा॥ इति नाग मंत्र॥ ॐ जँ गणेश्वराय स्वाहा॥ ॐ
धुं धूम्लने २ ॐ वँ विश्वभवे २॥ ॐ ह्रौं शिवाय २॥ ॐ
दुर्गाय २॥ ॐ ऋँ ऋग्वेदाय स्वाहा॥ ॐ यँ यजुर्वे
दाय २॥ ॐ सँ सामवेदाय २॥ ॐ अँ अथर्वन वेदा
य २॥ इति होम॥ ॐ सुँ सुर्याय नम स्वहा॥ ॐ सोँ सो
माय०॥ ॐ मँ मँ मंगलाय०॥ ॐ बुँ बुधाय०॥ ॐ गुँ
गुरवे०॥ स्वुँ शुक्राय०॥ ॐ सँ सानिश्चराय०॥ ॐ

रँ राहवे०॥ ॐ कँ केतवे०॥ पुर्दं वतु॥ ॐ महा सा
भुत प्रेत पिसाच राक्षस ब्रह्म पिसाच वेताल सर्व दृ
ष्टीक भयं करि विनासाय स्वाहा॥ ॐ हंस सा पर्ना
दुलक वक नयन मुखं दि भो दो वाल वृतो गृहा स स्क
अमुध पंन घि ह्या यवं धामि गतिं वं धामि नभ वं
धामि राषावं धामि सर्व मायावं धामि हस्ति सींह व्या
घ्र फणी सर्व जीतु वं धामि ॐ वं धमे कुरु कुरु स्वहा॥
ॐ पंच योजन विस्तीर्णा रुद्रो वं धति मंडले ॐ कु
रु कुरु स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय गणेश्वराय
भैरवाय दुर्गाय महासो निक भुत प्रेत पिसाच पैश
ग राक्षस ब्रह्म पेस्प वेताल सर्व दृष्टीक भयं विनासा
य स्वाहा॥ ॐ इन्द्राय दोसायां ऐरावतो वज्र हस्तो सपरी
वार सहित दिग्देवताधीपति स होतां यं इन्द्र वंधामि ई
न्द्र मण्डले रक्ष रक्ष मां चल मां चल माक्रम्य माक्रम्य॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ आग्ने
य दिशायां मेषारूढ सक्ति हस्तो सपरिवार शीहितो
दिग देवताधिपति यं अग्नी वं धमो अग्नीम रक्ष र
क्ष रक्ष मां चल मां चल माक्रम्य माक्रम ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं फ
ट् स्वाहा॥ ॐ नमो भ० ॐ दक्षिण दिशायां महो वरद

पासहस्तौ पूर्ववत्॥ ॐ नमो० पूर्ववत्॥ नैरत्ये दिसायां प्रे
तारूढ खड्ग हस्तौ०॥ ॥ॐ नमो०॥ ॥पश्चीम दिसायां
मकरारूढ पास हस्त०॥ ॐ नमो०॥ ॥वायव्य दिसायां
मृगारूढ ध्वज हस्तौ०॥ ॐ नमो०॥ ॥उत्तर दिसायां उत्तरा
रूढ पास हस्तौ ०॥ ॐ नमो०॥ ईसान दिसायां वृ
षारूढ त्रिशूल हस्तौ सपरीवारै सहीतौ दिग्देवताधिप
तिर्य ईसान दिसायां रूढ ईसान दिसामराडल वैधवी
ध रक्षर समाचल माचल माक्रम्य माक्रम ॐ ह्रां ह्रीं
ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय: अधो दिसायां से
षक नाग कुशलस परीवार सहितौ दीग्देवताधिपतीयं
धुलाराड बंदामो धुलाराड मराडल वैधवैधर रक्षर समा
चल माचल माक्रम्य माक्रम्य ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ
नमो भगवते रुद्राय ऊर्ध्वो धुलाराड दिसायां हंसारूढ
पुस्तक हस्तौ सपरीवार सहीतौ दीग्देवताधिपतियं
धुलाराड मराडल वैधवैध रक्षर र. माचल माचल
माक्रम्य माक्रम्य ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगव
ते रुद्राय उत्तर रोश्मे दिसायां गरुडादि रूढ चतुर्भु
जसैस्व चक्र गदापद्म वीराजीत सपरीसहीते दीग्देवता
धिपतियं विष्णु वंधामि विष्णु मराडल वैधवैधर रक्ष

रक्षर माचल माचल माक्रम्य माक्रम ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फ
ट् स्वाहा॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ पूर्व दिसायां वज्रके
नाम राक्षस तस्यो वज्रकस्य अष्टादश कोटि सहस्र
कोटि पिसाचस्य वंधामि ॐ अस्त्राय फट् स्वाहा॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ आग्नेय दिशायां मरीचो
के नाम राक्षस तस्य मरीकस्य ० पूर्ववत्॥ ॐ नमो भगव
ते रुद्राय दक्षिण दिशायां मेकपिंगलीको नाम राक्षस
तस्य मेकपिंगली कस्य०॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ
नैरते दिशायां अग्नी ज्वाला नाम राक्षस तस्य अग्नी
ज्वाली कस्य०॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय पश्चीम दिसा
यां मेकवलो नाम राक्षस तस्य मेकजलस्य:०॥ ॐ नमो
भगवते रुद्राय वायव्य दिसायां तक्षक नाम राक्षस त
स्य तक्षक नामस्य०॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय: ॐ हेमवं
त ड्रुमस्वति पार्श्वे महाभिमो नाम राक्षस तस्य महाभी
मस्य ०॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय: ईसान दिसायां सर्वा
धीको नाम राक्षस तस्य सर्वाधिकस्य० २॥ ॐ नमो भगव
ते रुद्राय: भैरवाय: गणेश्वराय: दुर्गाय: महासांनिध्य
ते भूत पिसाच ब्रह्म राक्षसस्य वैताल पंनग कुल पेस्यो सर्व
विघ्नीकस्य भयं करोति सोनाय स्वाहा॥ ॐ शिखा रक्ष

ग्रौं ग्लौं
त्तु प्रस्तारितो ॐ हुं हुं क्लीं श्लीं धूं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ग्री
रोरक्षतु मां हृष्यरो ॐ हुं हुं ग्रौं क्लीं श्लीं धूं हुं फट् स्वा
हा॥ ॐ केशोर रक्ष वैष्णवि० ज्वलन्त॥ ॐ मुखे रक्षतु
कौमारी०॥ ॐ जीह्वा रक्षतु सरस्वती०॥ ॐ भुजा रक्ष
तु वाराही०॥ ॐ वदर रक्षतु इन्द्राणि०॥ ॐ कटि र
क्षतु चण्डरा०॥ ॐ पादौ रक्षतु महालक्ष्मी०॥ ॐ पुरा
वक्र महागोष्ठा महादेवस्य संनी धौ यक पिमारीया
रोप स्पति शिव माप्नोति॥ स्त्रीय भूरु धो वा पद्य
त्रु स्मो ममसमरलमेत॥ आरराय मर रो श्चै च स
व गुरु नि वारयतु॥ सर्वकार्येषु सैसिध्दी विधुसी
ति भवि स्पति॥ इति उमामहेश्वर सम्वादे क्रोधक्री
ते राजविद्यायां महाविद्या नाम स्तोत्र समाप्त शुभम्॥

अथ महाविद्याजपसंख्या लिख्यते।

सीधोकरमा	२१००	शत्रुवस्यकर्मा	२८००
राजधोकर्मा	१०००००	राजे प्राप्ती कर्मा	१७००००
पुत्रप्राप्ती कर्मा	५००००	गुरुवस्यकर्मा	९००००
रथस्यकर्मा	८००००	वस्य कर्मा	९००००
इष्टदेवता कर्मा	१८००००	दोसवस्य कर्मा	१६००

हे छत्रकुमार शुसोमचारी श्रुपामलक्ष्मोम गर्नु मन्यावन्मो इ
सन्या दकुभो २००९।७।३०।७ मा.

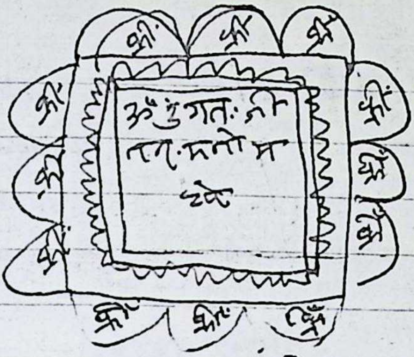

ग्लौं
ॐ ह्रीं क्लौं ग्लूं दुर्गायै नमः

बौरसद वाई-

प्रारोगस्य तोला १ अवारव तोला १ कान्तुरी भाषा दुर्वि
केसत तोला १ नेसको चर्स १ शुक्रमेल तोला १
मद्यको पीन तोला १ मीन्त तोला १ येति ओकमीलाई धो
र तापेकोरसमा ८ पहरपछगो र खान्छकोवी १ नाई: फेरी धो
र तापेकोरसको पाठ: सर्वरोग जाने मेरुदेख्छ

माइली० आमा० को० मी० ने०
ॐ फुल्लैमाको फुलैश्वामि श्वामिराजा फर्किआउ स्वाहा १०८

महामृत्युंजय स्तोत्र

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय स्तोत्र
मंत्रस्य श्री मार्कंडेय ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्री सदाशिवो
देवता गौरी शक्तिः मम सर्वारिष्ट समस्त मृत्यु शान्त्यर्थं
सकलैश्वर्य प्राप्त्यर्थं जपे पाठे विनियोगः ॥ रुद्रं पशु
पतिं स्थाणुं नीलकंठं उमापतिम् ॥ नमामि शिरसा दे
वं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१॥ नीलकंठं कालमूर्तिं
कालज्ञं कालनाशनम् ॥ नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः
करिष्यति ॥२॥ नीलकंठं विरूपाक्षं निर्मलं नीलयप्र
भम् ॥ नमामि ॥३॥ वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गु
रुम् ॥ नमामि शिरसा ॥४॥

फूलामणी चाडी -

मैंरीन ऊसिंदूर काजलि फल पारो मल तपल ला
वे रख काफलाम कोणीद जी काला सब चाडी
इति।

भूमण भवेंधो) मानंग (मेघ को

मा विसो धानि माधोटी वा ११८

प्रेमाने तोर कोमाक्षा.

चाँदम इवा) पोअफ नजावे मी काढुनटोगनम
वे धेनाधे उा आयुर्वेद

धनको रत. नवकपटनो) ईहूं फट्स्वाहा ॥ जबके
ॐ कुईकी कुईकी सात समुद्र पार तक जाडू ढ्याग छोड़ो
ॐ माहूँ लोहा ज गाउँ कोई कोकने जा जगाऊँ लोह की
जातादिरो पोडडर कनो ऊँलो किसोको लोइकी गें
मा गाडा जलोई कि डाज बारला गाउँ ॐ माई फूम
न को बाचा ॥ धनडो उपाधके

ॐ नारेताम रे माड़ा नारीकमलदा रे ओन रखी हैं
को भगपाईं फट् स्वाहा.

ॐ नमो गुवापीत नपनोत पने स्वाहा २१ धी
ॐ काका माजे उलका सींईं फट् स्वाहा ॥ सा
पावी क्रपय ॥ ई

✓ नित्य जापगानि ये यशान कावे पासे राजे के १०००००
श्रीश्रीश्री वृ वृधि धांगीज पिता माता सम. सकः सत
१०८ ॥ जापगाऊँ ॥

सात धूप १ तोला गोकुल धूप = १ कपूर = १ श्री स्वीय
क स्गुरो = १ मकमाा कुटो धूप डालन ॥

भैरव मंत्र १

ॐ क्लों ह्रीं ह्रौं हूं फट् स्वाहा। १००८ पे मन्त्र ले भैरव को पुजा गर्ने
संतुष्ट भैर आफ्नो काम सिद्ध हुंछ।

ओगवा घते २

ॐ नमो गुरु नरसींह नमो पुरव बाहु ओं खा बाहु: दांत बाहु हात बा
हु: पेपेर बाहु: इश्वर रामचन्द्र को वाचा महादेव को वाचा गोरा
ता को वाचा नरसींह को दुहाई: पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर बाधौ
आउ राती भपाति सिमाई चलो। नगले उघारे का चाव लज
पि हांन्नु चारै तीरदेरनु॥ सर्वै रोग जाने ३

ॐ नमो गोरक्ष राजभप हर गणा जप कानो दुख दिना ह्रीं श्रीं क्रीं
स्वाहा॥ पि सन्त्र ले राष्ट्र सरसों सातवर होम गर्न ईकीनो भुत भपे नी शान्त
होला॥ प्रीपंगु का जरा दशवार होम गर्न सर्व भपे नी शान्त होला॥ घ्यू ले
होम गर्न भुत भपे जान्छ॥ स्तम्भन पानि हुंछ॥ तेल: मह: चार वेर होम
गर्ने सवैवे धा शान्ती हुंछ॥ सुवर्ण चांदि: मुगा होम गर्न अर्थ सोध्दी
हीलछ॥ मशान को कपडा र वो काको रगत: होम गर्न सत्रुको भपे ईकी
से कोतृतिया रहुंछ॥ कवासको वीआ पांच वेर: होम गर्न स्त्री आक
र्षण हुंछ॥ श्री खंड: सिन्दुर: मैचीटीका लगा उन सर्व मोहन हुंछ॥ गोगु
अक्षत गैच होम गर्ने देवता भुत प्रीसाच ईकीनि सिंकोति को भपे
वार न हुंछ॥ कम्वातेल मैश्री आहावे धाध त ह्यालगाउन वा
ता पानि मैत्रो पिलाउन सबै रोग जा:॥

सवैथोक आरन्धा ४

ॐ ह्रीं गमारी मैगारो स्वमंगला देवि विन्ध्य वासीनि मेगल वासीनि
गुप्तवासिनी वनवासीनी जलवासीनी पहरा वासीनि मेरोपेगो
नी: महाकाल महां कालिनी चपेवा रावजाउ चौताली नी ॐ आदी
भैरवं छत्र दी भैरवं कालो नरसींह चौसठि योगीनि काला भैरवं काला
चमरेका काहि पिच्छडो नाटा बेलन्या निरमसान उठाइर ल्याई ताहां अ
उनि धाउत चार कदम को हात: सो छालीन्या वीर हनुमान को दुहाई फी
राउ कौने भेद को भेदंदं ईकीनि सीकीनि वाण मुकष्टा मारन्या मंत्र॥

उखागर्ने ५

ॐ ह्रौं औतार को देवी अरवत मारुं विरवत मारुं लोहाचार का बारण
है कपट कादुं उघार्ट भेद मान्हु उपकार्ट भेद मान्हुं आवौ तो का
ला भैरं पाता कोर सागर गोरी का चौकी वाचा॥

सातभूत स्रोहले छाया आरने ६

ॐ अ... दारां देवि मधुवन कासी कारे भूमे पाताल का तारां देवी
सातै ... काउ सातै भैरपाइ सातै डोधारा धनुका वाण त्रिशुल काका
हा पीर ... उ अगु गुरु कोठा कोठा लोहार कोठा ताहा जाई जिप नै है या
भाहान रासौ नरसींह वीर को भाहान राखौं हनुमान वीर होपे राखुं ई छी
कैराठ राखुं सर स्वातिचाम राजाजोगी को उत्तरा दिशा फेरी आई मारुं मसान
पादि राहि हात पाउ वस्त्र नाही पानि पीउ हुं मारुं फट् स्वाहा॥

- वैन्ध्या गर्भ धारीणी ७

ईश्वर उवाच॥ जन्म वंध्या काक वंध्या मृत वत्सा च यस्त्रीयः॥ तेसां पुत्र हीताप्या

यशीमुना सूचितंपुरा ।। ॐ नमो सिद्धिरूपाय अमुकी वश्यं कुरु कुरु स्वाहा १०८
अपुत जप होम ।। पत्ताको पातु गर्भिणी गाईको दुध मनुष्यका हर्दि
देखि ..... स्म रुद्राक्ष धूपमा चोरिखानु. खानु ।। दुध घ्यू. शागो. माल्पन्न नघ्यु आहार गरि
पेरुपार दुध औषधी खानु ।।

अथनागीकर्ण ८ ने

ॐ नमो भगवते अमुकपराक्रमं कुरु कुरु स्वाहा ।। १०८ पल्कलं च तं
भैस्ये मृन्मयं पात्र निक्षेपेत् ।। तस्योपरी जलं क्षिप्तं सुवस्त्रेनदापन ।। पुा
नकाले दुग्धसार्धं पेपीवे मकुर ध्वज ।। तल पुष्पोकैर्ण भाग वृध्दी मी
नथा ।। घरकी आरी आवारधा को दुद मिलाई सात दिन सम्म खानु ।।

ईन्द्रजाल ८९

ॐ नमो नारायणाय वीश्वंभराय इन्द्रजाल कौतुकानि दर्शय २ सिद्धिं कुरु २
स्वाहा ।। नृकपाले रवीवारे तैलुने पापसंकृतम ।। धापास पंच तत्सु
र्या श्वाने पातेन्च दिपेते ।। यावत् ग्रीव वशी प्राति भीना उदबो पिवा ।। अदा
सोदाशतां धाति पुरारोपरिधनेरपि ।। उत्कस्य कपालेन घृतेन दत्त कज्जले
लेमने मां अंले कृत्वा रात्रौ पठति पुस्तकम ।। घृ राताल कपं च्चाइं वेष्टीतं
कनके तथा ।। दृष्टमात्रे तु विवन्धं नाथ्य थाशीकरो दितं ।। दशहेम वि
सद् ताम्र षोडस तथ्य भाग्य इति वीजोह ।।

लोंगकाजाते

ॐ वायुवीर्सा धनशीर्षे त्रः ।। लोङको सोहनी भरपंजु द को पाचा न तीं हरो वा
याशतायक कोनाचाने स्त्रीको नाम सीतार सात अक्षेता टीई २१ फेराकुचो
लेमा तीदिन १०८ पटहेला अक्षेताले ११ फेरा मारीदिनु लोगको जीछ

ॐ नाग को लेवीको लेनासं वीना संपतंतरामोल हुं हुं फट् स्वाहा ।। योमन्त्रले
३ फेरा जपि पानि खुवाउ आर्खा लेवस्फुग रेको जान्देन ।।

उल्लागने ११

ॐ रक्ष ॐ रगत को रगत वो रगत मुकुट भार सां मृ भेद भेद उहग भेद सहगनीका
रक्षाम फुर मैघर्ई श्वरो वाचा ।। उल्लागने भीजदे.

बोजुनिको रुद्राक्ष १२

ॐ भैं भैं भैं भस्मांगी सर्वाङ्गी स्वरीमस्तु ।। ॐ हरी रुद्राक्ष नौपुकास प्र
लाबुह मच्छ वोहरी लिंगाकार रामहेश्वर पात पात हरिदेव सर्वदेव
नमस्कार ।। इतिरुद्राक्षको ।।

अथरसायन १३

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः उत्पति स्थिती प्रलयकराय ब्रह्म हरी हराय त्रिगु
णा त्मने सर्वकौतुकानि दर्शय २ दत्तात्रयाय नमस्ते न्त्रारोी सिद्धिं कुरु २
स्वाहा १०८ अपूत ।। श्वेतदुर्वागृहीत्यातु हरितालैचपेसयत् ।। एभोस्तुति
ल्वे कृत्वा त्रै लोक्यं मोहयंन्नर ।। गुप्तमन्त्रे हरितालैच गं धकं च मन सीला
समेस भं गृहीत्वातु यावत् शुध्यपेषयत् ।। १ ।। एकादशदिने यावत् ये
लेन रक्षपेत्तदा मन्त्रे वा धुपदिपा द्यै सुगन्ध पुष्प संयुत ।। अथमन्त्र ।।
ॐ नमो रसाय रसायन सिद्धीं कुरु २ स्वाहा जप होम १०००० गर्तकुराउ
यनि क्षिपेत्पलास्... षवेहो ना अष्ट यामेन पर्यन्त्त नान्यथा
हीमरोदितै तत्भस्म ओपते सिद्धं छिसीधी सनामके ताम्रपात्रेअ
ग्नीमध्य विन्दुमात्रे रा निक्षेपेत् तत्क्षणा ओपते स्वर्णा नान्यथा
क्रीकरोदिते सिद्धीपीठे जपेत् सिद्धी गापेत्रि रास जाप्के वर्षे प्रति

आकासभैरवमंत्र (१८)

ॐ शमलवर यूँ ह्रीं तरु चर ऊँ फट् गहि भैरवाय: स्मीं क्रास घोर
तु पस्वाहा ॥ २१

कृयाकृत्वा गोप्यंने कपुकासपेत्सिद्धिभ ॥ ॥ ॥

साँतो नो लाउने: १४

ॐ सोमे भुमे माहावेते ग्यानवेते ध्यानवेते गुतवेते विद्यावि द्यानारौनि
द्यावतिसदं तंकोवाचा ॐ सोमे भुमे कोवाच्या हुंफट् ॥ ७ फेरा सातोऊन ॥

दांतको कीरा ले: कपाल दुखेको १५

ॐ वर: ह्रीं श्रीं स्वाहा ७ फुक्नु दीहीको पर लाउनु कपाल दुखेको निको हुन्छ ॥
ॐ रउआमाहो रानिमारी मारा सारेको हीली सातसमुद्र तारो आई लाग ऊँ फट्
स्वाहा ॥ तीनफेरा झारनु ॥ प्रतीको दांतको दाँत दोझोलो

धात नहुनेको औखदि १६

कात्फीमीखी १ फेकराते दही १ वंशलोचन १ खुर्पुजाकोरस १ सात दिँ
खानु २१ दिँ स्त्रीसंग न जानु निको हो ॥

ताकता सीपोला १७ ॥ ॥ दाँतीमकोफुल १ गुलाफ रामतुलसीको ताक्नाओं
आको थोक्रा १ घरागो छाति तीन पात्रा खानु ॥ नीको हो

पेट दुखेमा १८ ॥ कपुरेहीङ गोटा १ कालो मीकुरा मेजलो जुरी मोल दहीबाट खानु निको
आँखा ओरति दुखेमा १९ ॥ कागतीकोरस १ ओटेनुन १ पानी पाएकाई लाउनु
नासको २० ॥ सीतसालको धुलो १ गुलाफ १ नाईपात्रि १ नावीपो १ तेली
सबैको धुलो १ पेतिमा लाईछिया खानु तमाखु खादै ॥

नाभाती नाघटी एकपेना ॥ म्हटकीरी १ धीच १ पीपी लाउनु ॥

बारमासवेट दुखेमा २१ ॥ कुचीला कोच्चकी केराउ गेडा पुराना
गुडका कोरस मा खानु तातापानि सीत सीतनु खानुनाखानु ॥ ॥ ॥

(१९)

दंतेफो ॥ २२

ॐ अं आं ऑं ह्रीं श्रीं क्लौं हुं हुं फट् स्वाहा २१ ल पेफ्रफनु
फेरझार सातो: पारीको पुसले झारनु २३
ॐ नमो गुरु नमो आगनपको नयने स्वाहा २१ ॥ फेर झारनु ॥

बालकको सर्व रोग को फुकने २४

ॐ समलवर ब्लौं तु वरेउ चर ऊँ फट् स्त्रीं घोर र पस्वा
हा ११०० ॥ पुर्ण सेवा ॥ २१ पटक फुकनु पानीमै फीकानु
ॐ कारकासि इलकास्वो ऊँ फट् स्वाहा ॥ २३ घरमुनु ऊप
फेरझा ॥ २५

सातो सास्थी को मैं नलोफु मदा आंधेमनरे २६

ॐ हनुकंरायके मन्हा भैरव हनुमन्ते ई फट् स्वाहा २१ फुकेर
फेरतो पानी रुनासुफुकनु खानेजन ॥

पानी को रुना असना फुको फरसनु २४ नी को ...
फुकनु आले २७ वे लेपनी फुकनु ॥ २७

ॐ हरि पीवन पहले पानी सरवनु फट् स्वाहा ॥ स्वाहा ३१

कुपपसेजस्तो डाढ रपने ले फुमदा निको गरे न मने
हातिदीपे को मनिजोनु पान धर्मगरेन २८
ॐ हागिनि हाल्यो कौंड विली हाल्यो सांडु झाडको वनजाने देई स
तसमुद्र लाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वतीको वाचा २९ ॥

ॐ कीरोकीरीस्वा २१ जगा फाड़ने मंत्र

ॐ यँ आँ यँ क्रिं यं स्वहा २१ पो मंत्र जपी स्वा
पु सगुले के की कुविद्यागारी पुराये पनी के की कु
देना।। फी. पी. मंत्र बी।
ॐ ह्रां ह्रिं ह्रौं समन्ता कवच उच्यतु फी. पो मंत्र ने
हनुमान जंजिरा महामारी:
ॐ विरं हनु मंत विकट हनुमंत रक्ष हनुमंत वज्र हनु मंता
भैर वभूत वाल हनुमंता। चलो चलो ॐ जानि सुन वर: पुत
लां काड हव पव वपुत्र ॐ जा।। पालो राम दुत। ॐ वं वं वं वं
वं हनुमान्य ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं ह्रं कार मांजं सं की नी ठं धी नी भूत प्रेत पि
सा च वाधो धार वा धो तोर वाधो भूपन वाधो नर वारी वा
धो ने जावा धो कु हक वाक वाधो. च न्दु वान वाधो जल वाधो
अग्नि वाधो हल वा धो भुजा वा धो मां करवाधो. पाथर वाधो.
वाघ वा धो. मेर वा धो मेरे हाथ दे वाहाई राजा राम चन्द्र की
दाहाई सिता सतमाति की दुहाई लक्ष्मण की राजा ति को देहाई
मेरि रस्तान करे तो गौतम ऋषि की उचार हाई ति जी गी रा.
ॐ राम लक्षो मन दुजभाई काट्याई फुर चुई भूसट जाई गौरा
पार्वता माहदेव का वाचा।। सुलवद्ध ने गानो फूली यो
फूने का इसे का पेट मा चो सुलले ख्वि काथ ले कारी फूकी दि
नु बी को फुन्ध

१ सर्वरोगको झारनु तारे उल्था जेग
रेपनी फुन्कः

ॐ गजकेसरि जलशक्की वनशक्की सुनझक्की फूलगुरु पं
ती पासनी लोचः धोला वहमे कीमाल चौकी च्यार चौरासी
धुंनेसी छ माता गुरु रोका भैरव वाग भैरवः काल भैरव भु
कीसन्य सी भुवाल भाट भट नीली सेती से चर गुरु व
बजरे गुरु भावा कैलामा कैलामा टकेलामा लेसे गुरु
छोटे गुरु ते चेगुरु को बांचा २१।।

इन्दुको छोरि इन्दुकुमारी अपसरा संसते गुरुको वाचा
धर्मको सास समुद्र जगाउ गुरुको वाचा २१ " हावाले मे
रेक्षको फुकने :
ॐ रामलक्षु मनू पकेला सीतला माई श्री गोरखु
बा नाथकी वाचा २१। पारी अजी माको झार ने

ॐ काली माई कलवलकुरे मरामसारे खपर भरे
जाफदि छो तम्रा तेरा रुप वहाँगो कुलधुपा जगा
कधारन पतकमारन सुभसा चो पीरकाच
पुर्वमे चइ इश्वरकी वाचा ।।१०८।। सरीर मा सार
फुक गर्न रोगराला इपनी फुन्ध सर्व फुरा को झार ने

सर्वजातफुकने

ॐ सु[illegible] विनाएनक्रिवावाहें हुँ हुँ हुँ पैँ [illegible] फ्रैँ फँ वी
विवीँ [illegible] क्रिँ क्रिँ क्लिँ क्रिँ हीँ हीँ ह्लीँ हीँ फट्‌ स्वाहा
ॐ क्रोँ कुँ ह्रीँ कुँ क्रिँ हूँ ॐ स्वाहा। ११११। हवन [illegible]
[illegible] द्वादस[illegible] हवन [illegible]
ॐ ह्रीँ गेँ श्रीँ चामुण्डे [illegible] वीजनै लोकवस[illegible] ॥ ६२६
[illegible] जपने सर्वसिद्धी मिलछ॥

ॐ वीरवजीरिं हनुमन्त रमायेन चलेवेताल चलेलोह की गजासु
स्तावेलसीँ दुरकी पुजा हुँ हुँ कार भुत कील्ला मसान कील्ला बाग
की हात वाग की छाला क्षेद स्येद छाती फोरी भरी कोरे स्वाहा॥
ॐ नरसींङ गुरुकी वानसी खलाउ वान चलाउ नरसींङ गुरुकि वाचा
[illegible] वान फुकाउ ईश्वर माहादेव गौरा पार्वति की वाचा॥
मंगलवार [illegible] आदि [illegible] ॐ अजिर[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
मेटनु
[illegible]
[illegible] स्तोत्र १०८ [illegible] पाठ गरी [illegible] हजार [illegible]
[illegible] हवन [illegible]

ॐ मीवालेस्याट् झो वालेस्याट् चुरीस्याट् फट्‌ स्वाहा १ पानी
को ङामा [illegible]॥ १॥ ~~[illegible]~~
मेरा जागुं गुंसे राजा गुंगुंसे रानी गुंगु फट्‌ स्वाहा
१ [illegible] १ आगा को ङामने मवर
ॐ नर्सीङ गुरुको वाचा २ आगनी स्वरा लगाउ वोकुसी
दै कौनी कौ भेद फीराउ ॐ नर्सीङ गुरुको वाचा॥ १॥
[illegible] फुले वोलन[illegible]॥

आगो पानी मारो नगाउने

दुपई जगाउ गुरु आगो जगाउ फूङे जगाउ मुथ म
सान जगाउ गुरुको वाचा १२१ रायो सरसीम फु
की सलीलिछो पीजगाम गाइनु
ॐ सीँगो नीव्यागो [illegible] सपोनी [illegible]
[illegible] सन वीज्याफ गरुँ आगया खमौहनी
ॐ नमसीधी गुरु अगिपा चरीमरी हुट चक्रम
[illegible] गँ हुँ फट्‌ स्वाहा [illegible] वीगारमा अकुवाचा [illegible]
[illegible] ॐ अफास [illegible] पताल
फेरु सईकुकुर वीला [illegible] कुकुर डुकाई [illegible]
रखको वाचा फुट्‌ १ वेर [illegible] वकुलाकुकुर [illegible]
ॐ ह्रीँ प्रीँ स्वाहा॥ १ ग० फु० मी०

ॐ गानुगानु पुलागानु जरुगानु फो रँ ईश्वर माहादेव कि वाचा। गौरा
पार्वति तकी वाचा ।।७।। गनु फू० स्ना० ह्रे०
ॐ केवला मारु केवलाशारु ईश्वर माहादेव कि वाचा ।।७ दाँ० घा० क्री०
रु०।। ॐ आजिमादेवि कुमादेवी हारीदेवि जफ्रति सीपु देवि माहे
भई ती ला ए०ला री के ए के ऐ लाई छोड़ि देउ पर के स्वरीर शई
गस्र उसात अभाताप छी फ्चा कनु

सराकवंग्या प्रयो

ॐ नमसी श्री गुरु आगाय कामी ब्रामी ऐरा वाधु कांद्दा गयौ वल
डरा छोरी पल्लो डाडा माजाउ हुँ फट् स्वाहा :।७।।
ॐ सीधि गुरु आग्या लल नासये हुँ फट् स्वाहा ।।७।। ग्व फैक्क कीजपा
नके चीपु लैके छोलई ।। ॐ गुरु आज्या सइस जारी रत
वन्धा लई श्रीमे सी हुँ फट् स्वाहा ।।७ पढीमन्त्र नपुफे हीये पी
नफो का जो।।
ॐ काला भैरूँ कोपिली जटा अष्टांग रूपाय महाभयंक
राय स्वाहा ह्रा औतरीश भूत प्रेत डाकीनि सा कीनी
शादफेद दमनाय स्वाहा ।। पाति मंत्री पुग्रा तवीग तज फी फूकनु
उवागनु जमागरे पानी इन —

२३ ॐ सालैवा धमपतिसारी मसु धादपेरैवा धममनिसारि मसु
धादगृ गैनिवो कू सौवधमपतिसारी मसु धाछेद भेटवा
धमपतिसारी मसु धाभुत पीचास वा धमपनिसारी म
सुधावा धौ नवा धमपनी चारीम धेस एकालि वाचास
तेस्ते गुरु की वाचा ।।७ एस मन्त्र लो वाली जधाउनु धरवा
धनु फूंकद मारो जाउने
२७ ॐ सो ह्री गुरु आग्या गुरु मायु ज्वल वी सम ज्वल हाँ हुँ हुँ हुँ फट्
स्वाहा ।।७।। जो रे फो कारमन्त्र
ॐ श्री गोरख के आज्या हुँ हुँ फट् ।। पानीम ची षानु दीनु अनीपी पे
र दुखे को नी फूंकन्द ।
ॐ अं आं ई दे ऊं ऊं ऋं टाध फट् पो मन्त्र लो जपी धतुरा के जरा वेटि
ला उनु विरवकस को जरा फूकन मंत्र —
जागो रु नीलो फूलको पहेलो जरो विछद सेज रे जागो
धाल फुल वाली विरवा के जरे जागो फुल ठा दृष्ट जाग हागी गो जागो
पाते जागो मन्दे जागो फुलै जागो हीमालु फैले कालो फूट नीलो वि
छै जागो ।। ३।। मारी मसी जगाउ डाई बानु पारै वानु धारै
वानु चारवरानु वा … नै जका समारासी मारी पताल मारा सि मासु
पताल सिला लवा कारी के तिर जंगुराये पो सरसी गरीस हु क्री दे
गरु धनारी फूल भगवान सह वा वाली वो षड् दृष्टा मा ~~नी~~ सावि गार
कै दोउ को कान धेनु गाई कि गोवर गोत

४ वेद

ॐ सोम् सोऽहं = अजपा गायत्री।२१

ॐ अहम् नमो ब्रह्मा: ऋगवेद) ॐ खम् ब्रह्म) जयुर्वेद।
ॐ अहंमतत्वमसि ब्रह्म: सामवेद) ॐ शानप्रज्ञान ब्रह्म) अथ
ॐ पञ्चामेदह सरस्वति मजि पुनो सरस्वति इ: १०००००) अथ
गेर वीद्यापाप्नो। अग्नीस्थापना साधनिह पोगीत)
ॐ ह्रीं क्लीं हुं फट्) हवनगर्न) द्विरो गर्तपरेमा नवार सामीवले मर्तनभपारमा

ॐ ह्रीं श्रीं गौं गोरख विजः ओनमो॥ नमो गोरख नीरजना पुवो
दपाय॥ ॐ ह्रीं हुं फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौं गोरख हुं फट्
स्वाहा॥ १०८॥ सुसो १०८ उल्थे॥ गोरख
गोरखनाथ मेला॥ अरु मैगले नलोमा: से इग
घरवाघन वै ओ की ला फलाने इत्र रजु टेनो नाजली
ऐम दराको जो मदनाप स्वाहा:। ॐ अमुल हनुमान के
गुकिंउ तुमानाज हनुमान चलो: छाला भैर बकले। चले। मह
रले: भोर के थोंगासी भरो अब भैर पीवे। महश्मेले ने:
गोनीकि नाथ दामे हाजा चातुलाना दाम भर लाना नील
र लाना: चारधापि अष्ट भागि: धनंतरी गुरु: सतगुरु ॐ हि
नकोगन्ना॥२१॥
ॐ डोकीलि कुराउ: पोकूसीलि कुराउ ॐ गृहमंराय लवाधुगोला
लावाधु वाधुकधुं वाधुं ॐ अद भागियो ना भाले वाधुसप्त धाकि
नगा माजेवाधु मेसे ताललगा न्सोड़ इोलो ३

~~ॐ मौहिनी~~
ॐ नौनिदानं उत्पन्ने देवि तहॅंनमलो: हॅवीत:
पुरि गुंजगम्भरी मंदलमें आस्थांग: वज्रांगकरौं असधुति:
धातुजानु: लेका: वाईरजासु जानुनासरस:
पापाविरनरसी ऊ: वीरकहे तनी कुरनरसी ऊ:
वीरवोलाये: जोमुख फेरे ढेलगरे छलगरे:
भेदगरे: कुलगरे कपटगरे कलगरे छलगरे:
ओगरे सोमरे नीरपा की सती मेरी भक्ती:
ईश्वर ईश्वरी वाचा: - - - सकलदोस छुटउने

उमिकवचको) भुपले कारणीके देना

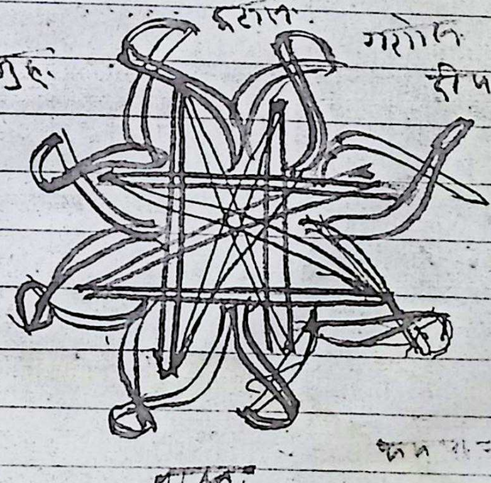

सुकुवाको (नासवीगार कार्ई नासपोगा रुहारे:)

गोमपलीङ् १ कलस १ गरोंग्रा १ व्यापैपु जागरनु धुपदिप। फुकुदको ठाउवरवाली पुछनु) ॐ अकाङा अकाङा गरुड मगरं पाताल पाताल स धमारु) मो चैमारु मोच्चैजारौ ईश्वर महादेव गौरापार्वति को वाचा २१॥

ॐ का फला काफुलो जैगा काफ्ल वहाँ लति फल वनैस्लैह ~~पाये~~ चोचक ~~वार्ह~~ वाङनो चकोरो हालो पारो ~~ईश्वर महादेव गौरापार्वति को वाचा~~ २१॥ फुद फुद गरुडको वाचा॥

ॐ भै८ वालामोच्च मारू वालामोच मार ईश्वर महादेव गौरापार्वति कोवाचा २१॥

ॐ गरुड ईन्द्र वान्की क्रीको सज्यात छेक्क नाग उठवाल जापागरुको सक्रो मेरीभ क्रो जागोभव फुरो मैवं वाचा गरुड नारायनको महो मैयक्रो यन्त्र ले रक्षिवा धर्ईजा नागनागमा॥ दराहावो क्रुद्ध॥

ॐ ईस्वरको वाचा ल्यानि ल्यानि तेरोकतात्व गयो गोलो फालो घोपनु सीयो काटि रो पनु ईश्वरको वाचा॥ घोकेटा केटि वेथा हात गोड रत्नुलो दापुक गक्ष्मन लिखेको

ॐ अचीसार थामनु आति सार काउं नमो भगवति रुद्र धाल रुकिली रुचर रु स्वाहा॥ पानी फुक खानको

नयार्द वोपुनप क्रोधी हिमधि स्पवदे औमि मधीर मणिपत्सत स्वर्ग भुर्भुव ॐ (कीट धनी)

ॐ मोहनि मैव जगाउं फिराउ इसे मनतरसाई काचा चालो फिराउ देवि कालेवाचाले फिराउ मोहनि फिराउ ईमाल राजा की बाचा फिराउ अमुककी अचाले मोहनि मैव जगाई फिराई अउनी मोहनि भस्म अरई २ मोहनी कथा मैत्र जोमा लाके कोहजपि मन्त्र॥ २ लेपा

ॐ वेतिशारै मर्टि शारै मरि शारै भूत मसान राक्षस मारे अकस्म गर्भु पत्माल धसु गुरु गोरखनाथ की वाचा॥ धाडे सासल अरका लो हानेको धारोघुलो ॐ क्रन्पाले गर्भको लेपा॥

ॐ कालिका जेठ काला भैरु धुत मसान जिस कुङाको तस्को आना आके तो धुदेन हिर्दा जाई धोई कुन्दी मेरी गन्दु गन्दु अति गन्दु आंवे पगपर फुरै ईस्मोर सत्य कालिका पुत्र ने रीवा महादेव फुरै ईश्वर की जटा फुरै गुरु की सक्ति मेरी भक्ति ईश्वर सत्ते काली ते रीवा वा॥ २१॥ अरिषडले कोसकाथा ल मालेको अस्मरु गेंद पारी पीला दिन पपे साकापो पुर्जागर्भ के मैवले षीयाधी दीज ऋम १ लेवाद गर्भको ह

ॐ नम

ॐ नमो आयुलुं धारैं छाइलुं आभु आभुं श्री गुरु को आग्या॥ सी ॐ क्रो हरि सो हा ह्रीं रः केरीं सोहा नाव तारी कलो रेम: मपारी सुमाद सुलग्पानउ तागपान प देमर से अद मैं सेरुपान: विघुधा कीध इगुरुपान मेरु कलि गरुको मगती फुफ रुफर् ...॥१। चं कु ...

॥ ॥ ॐ ३.६

मर्मवालीको

बाको १ येउटा धानको बाला १ मुरखबाट ल्यायो कोफ १ पैला पानी कुतकोराम स्त्रीको उदो भात पैलवेते मे सोको बी ओती १ फूसासी दुर १ ईङ्ग दवी लाई चढाय कोराले १ धम राको फूल थलारी ठोकामा यति ।

गाउको

स्कलेवाको १ हिङ्ग तोला १ रोकाको वो काको नमो १ स्कलेल धुर १ थलारी दीं तीर ३१ मसारोनस्को दाना

ॐ अजिमा देवी धुमा देवी हारी देवी जकुति सौं वु देवी आदुम देवी लाटालरी के राके टीलाई छोडि देउ परमेश्वरी रक्षा होउ ओ सारा ता अक्षता पुछी फाकने ॥ ॐ हरि मापा के कौली अजि माकी सृष्टि धम भाज धनै भैजु सषि भैजु हाहा भैज ओपभैज आव बाजा कपिल भैरू की वाचा ॐ फट् स्वाहा ॥ मासी हुले आरनुर
ॐ पानि कालिको धुम समै भूकोता हे आफ्ना बापोपि प्रेत स्मो तजायी देउ काढ़ इई सीस्लो रारते —
ॐ गुरुकी वाचा अजीमा गुरुकी वाचा पिचमाहा गुरुकी वाचा प स पी बीजा इ तोता इ पंच कुमारी कन्या गुरुकी वाचा अक्षत पुछनै

श्री मुनी
१ ९

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति वात्तालि वाराहीं खांइ रामुरिवे २ अन्धे अंधिन्यै नमो रुंधे रुंधेन्यै नमो जम्भे जंभिन्यै नमो मोहे मोहिन्यै ओ स्तंभे स्तंभिन्यै ॥ नमो अमुकं जंभय २ सर्व दुस्त प्रदुष्टानां सर्वेसां सर्व वाक चित्त चक्षु मुख श्रोत्रे गति जिह्वा स्तंभे कुरु २ शीघ्र वासीकुरु ऐं ग्लौं सौं ह्रीं ऐं ठं ठं ठ ॐ हुं फट् स्वाहा । इति मंत्रस्य पंक्ति अगरोधाप्न गीपरजामनेकु

ॐ नमो सिद्धि गुरु आगया ॥ ॐ हुं माहा गुरु हुं सपारी नारीका काम नाकी धारो जसो कहा नः हनु से सोक फेरि फेरी देउ खाउ मेरो मुख यति खेड

ॐ कालि ग्पान मारे सेतिग्पान मारे पहेली ग्पान मारे ॐ ओकी नी काकु ग्पान मारे कुवी झे मारे सत सतग्पा कुमार अक्का को वेराग राग की वाचा ॐ पत्ताल की वेराग राल की वाचा ॐ विधो मारे कवि धेदो मारे ॐ उनार कड औ प कुमुड मा सात सिर म रवेक एक ले देवी कीसत वाचा लो मारे ॐ हुं फट् स्वाहा ॥ ७ ॥
आ कनन्जन फुत्वाइ नीतरे के आराम ।

१४ दशि आदि. बेभुका. दिपक लडा गरेपछि पुजन गर्नु. श्रीमद्भग
गीता को पाठ गराउने (भुजा गर्ने र) चरू वली) माष वली) पापसव
सप्तसति पाठ) स्वस्तायन. गौश्रीचे ऋचा ले ३ फेरा रो
रा कुण्ड कपाठ गर्नु. ओमो को दि. ध्यान बेभु रा. जपा ३ को
बती. पढगर्ने. ११००० हजार हवन गर्ने. रा. पो. बेभुका लाई पछी
म फुकाई वालनु. ध्यान पुर्व फर्काई वालनु)
ॐ अमंत यो मां त उप स्प्रियं त्रिमुधि शुत प्रक्षिवं ने वदामि ॥ श्री
धवते. वा. पोकरना ले ४ फेरा लगाई प्रतिष्ठ गर्ने.
गस्व. गर्न फेरमा.) मोडाते. मो ही ताचेव मोरस्वामी इति चावरे
रमो हुतकामना)
घरको भेद मेर. भामने. यौ लाइने) धापने) इत्यादिका. सबै
पधाले पाउदिक
गर्भ पातको काम ॥ ॐ सुन बाधौ कोरव बाधौ बतीस कोठार बा
धु ओंग बाधु स्री बाधु रगत बासु बाधुं ओमुत उघारौं कोरवे उघारौं
बतिस कोठार उघारो अगं बीरी को बाचा ॥ रगत. बाहु फाले
फुल. कालो हलेदो) ओगबीर (को औषधी)
ॐ ओगरोग. सरिररोग. कोठार (रोग) संते तेते संमदा मद. आ
फ्न वस् राघे. संमदा मदा ॥ पानी लाधा लाउने ॥
नौ त्रिवेसार माउ लागर पनि फुक. आदि मैसो लाई ॐ चढ औषध)

धनी लोको.

ॐ धनुको कालो धनु नराली. उधको मुंहडारी. महादेउ.
बाढे सी बोनाचा. २१ कुइको भराले मारनु.

बानमारने. अघ्रकेको उज्जा मारने.

ॐ अ लक धनु फुलको कालो काठ लाकाठा. सा नमुद्र दारी. बान को
दासो लो. २१ फुकन.)

ॐ सोर बाधुं राईने फुल बाधौं जिगे नबाधुं इद फन बाधु बतीस कोठार बाधु
ओंग बाधु ओंग बाधु सोल बाधु माड बाधुं हाड हाडु बाधु नहा नसा बाधु रा
गतल नका पानिले बाधुं बवी देवता माकाकाले बाधुं. आनी मानका
छे बाधु गोरेल मावाक. ले बाधु हनुमान मा गकाले बाधु. उनी मध्य
माता कालका भौ नारे देवना कालकाले बाधुं शीव मध्य गना बाले
अमलो का गतोले बाचा
बाधु. अद्ध बालिका बालक. बाधुं स्वप्नधान दाता ज्ञाले बाधुं
मतहि बाचाबाले बाधुं. श्रिव पार्वती को दुहाई. फोरे रमो दानी
दिउ. छो फने. दसो ले ईश्वरिय ताले बाधनु.

ॐ रफालो फसालो. मैले देखि काफा लागा. ओरे देखि नोनी फाला
ग. मै देखे काफा लागा ॥ ओंरस्वोर गेती मा काफ दे छि
नासा लागा) ॐ ओरेजोडी ओंगजोडै. हदप जोडै. शिर माउजो
डै. स्वो दी माघा फुथ छ लाग गुरु पतो पका स्त्री लाई फहाने
उको काजर. ॐ जोडे नो सगाउ जाग उ जगाउ मन को हाकि
सगाउ डास दोष निजगाउ. ॐ पानी मो हनी जगाउ. ॐ पा
नोल नाहनि जगाउ.

ॐ पुरुष मोहनि: कुराउ स्त्री मोहनि: कुराउ ।) २१॥
ॐ गात गात नामो मसाउ लगाउ उदो आगाउ, उदै फाटो: इ मो आ गा
उ उभै फाटो नामो मसाउ लगाउ: गाउ फोदो हो लो ।।) फार ।) दिगाउ
फूको: पाउ:॥ वीगार फेउ लागेता॥
ॐ चीलो वीगार माहि गुलो फो वीगर माहू मेडा वीगार माहि अन्न वीगार
माह ॐ सरिर लगाउ ॐ पनिशको ठार मोठार लगाउ: हाड माउ लगा
उ: नसनसा लगाउ सर्व वीगार माहि वीगार मो रोको लो: चलै का रीति
गाथा: २७॥
ॐ गीगा पानी समुन्द फोज असर पानि पेसर
फुलो जा: जप फुल ।) समुद्र पार गए सत्की मेरी भ
क्ती ॐ फट् फट् धी ।) इ गेडा मरोच चपाई फुक ने
मासा नै भैत / ॐ सर्व ज्वर हन हन मेच मुंच अमुकस्य ज्व
र मुक्तीं गछ स्वाहा। २) फुलेहा॥
मौं
कामरू देस की कामाक्षा माई कामजरो कुन कारण आई वीदीव
गोरख की वाचा रुद्दी ज्वर उड़ हिस मछु जोगीनि की दुहाई प
पा का फल को मा / माली साति मासी माली मोच जिफूक् स्वाहा
२) धा रनचासीकि बीता नी पत्ते इ पति का /
गामें गामें माके नानो वजु फीठ लोहू चक्की वीमन कोगेज मम
विद्दो न की वडु फ्रोगीनि दो काकिई कवि मसाकन फट् फट्
फट् स्वाहा पजन की मजु देमाक का झाउ द /

ॐ आदिनाथ आज्ञा फुरै: ॐ आसनी जरा काम ना
गोरखनाथ की आज्ञा र फट् स्वाहा: साद फूक नी लाइके

ॐ कमला माई कमला देवि कमला कुड मा जाई वैठो ॐ ज्वा
ला देवि ज्वाला माई ज्वाला कुड मा जाई वैठो ॐ वाग वागीनी
वाग कुड जाई वैठो ॐ नाग नागीनि नगार कुड मा जाई जाई
अमी ॐ अघोर माहा घोर प्रचाघोर हुं फट् स्वाहा॥:

ह्रीं बालकहि के

ॐ श्री ह्रीं ष्ट्री सुष्टी सुरसुजा पुनाग आलक्ष्य कामरूप चोसष्ठी जो
गीनी तेरे तक्षो स्वाहा गुरु की सक्ती मेरी भक्ती फुरै इच की वाचा आ
कास वान पताल वान देवी रूप वान डंकी नी वान गुत वान साततला
जीती असी पठाउ: गुरु राजा नरसींघ की वाचा कालाक्षी की
वाचा फीराउ फुरै मैं ईश्वर [illegible] धा ।) बाद के
सर्व कोक लगाउने ॐ ह्रैं क्रूँ [illegible] हुँ नरसींत की वाचा
जन्त्र उ टीहह की वाचा ।) ऊक —
मार्ने लगाउने ॐ क्री पो गोरक्ष वाजुजूँ वैसे कसे सो या वजी
सेसे कली गाकीत रस म सीधी लोते नर या ।)
मैत्र जन्त्र ॐ जोम गुरव मैरे रगत मैं कैसैं फिस मैच लो मैदलो
मरे को लाई गर्जु: ॐ आदिनाथ
ॐ विष्णु ॥८॥ ॐ वायुरीति भस्म स्वाहा जल रीति भ
स्म स्वाहा: अग्नी रीति जल रीति वायु रीति भस्म
स्वाहा धी ९ — पूर्व सेवा धातिका अइके को ।) न सदे
रोग नाम रने /

इति कुलवकाइने मैव

आन्वाधाक्रीली इहे सर्वचैत्रिराय वन्मनन्‌ पटनंकयडि कुसी
नीत्‌ इव धनंकुलकुर स्वाहां १० जफ ॐ मनामन्नी वगुरमोदिन
नमोमहाकाली फेको जाली वजुकीलहु चामको पैंचीमन्ना
[illegible] कलिडडा उत्रमारयेहु इन शाकिनी सपरिवार हुँ हुँ फट्
स्वाहा । पोडसोमात्रे ।

नमो आदेश गुरु को ॐ नमो अपना गुरु त्रिगुती न लोक चौदह भुव
न काम [illegible] का रविपार के माद्येल [illegible] का चामीनाग
पुनकी वाचा को नमो आदेश गुरु को पानी फुको रवाना [illegible]
दीवदी ।

ॐ महोदरी पुष्प वसा क्रां क्रीं उ ॐ ह्रीं फट् । पानमें गीनाइके
ॐ नमः पिनाक हस्ताये वज्रगो पैं हुं फट् नामये वसमान के
स्वाहा १५० जप [illegible]
ॐ हुं रक्ष रक्ष चामुण्डे ही हुं मन्त्र [illegible] स्वाहा । [illegible]
[illegible] । [illegible] । ॐ वज्र [illegible] स्वरवी हुं
हुं स्वाहा । [illegible] पानी [illegible]
[illegible] ।
ॐ [illegible] स्वाहा ।।।
[illegible] । ॐ चामुण्डे [illegible]
[illegible]
[illegible] स्वाहा ।।

ॐ कमला माई कमला देवी कमला कुडा मा जाइ वैठो ॐ ज्वा
ला देवि ज्वाला माई ज्वाला कुडा मा जाइ वैठो ॐ वाग
वागनि वाग कुडा जाइ वैठो ॐ नाग नागी नी नाग कुडा मा
जाइ वैठो कमला देवि कमला माई की वान पेलाउँ बेला
उँ फीराउँ रक देवि रक माइ की वान पेलाउ बेलाउँ फिरा
उँ ॐ ज्वालादेवि ज्वालामाइ की वान पेलाउ बेलाउँ
फिराउँ ॐ वाग वागनि को वान पेलाउ बेलाउ फिराउँ
ॐ नाग नागीनि को वान पेलाउं बेलाउ फिराउँ ॐ मोक्ष
काम सकी वाचा ।।१।। ॐ चमेनू चमेना की वान बेलाउँ
फिराउ चमेन चमेना को वान बेलाउ फिराउ ॐ घोर भैरे
भैरू को वान पेलाउ फीराउ ॐ आकास देवि को वान
बेलाउ फीराउ मोक्ष काम सकि वाचा सीह राज सीहरा
नि को वान बेलाउँ फीराउ ईन्दु राजा ईन्दु रानि
को वाचा वजु राजा वजु रानि कि वान बेलाउँ फीराउँ
नाग राजा नाग रानि को वान बेलाउ फीराउ । सौ मैं
जोगी जोगीनि को वान पेलाउ फीराउँ सान हैम चुलको
वाचा वजु जोगीनि को वान बेलाउ फिराउँ आठ भरयानी
को वान पेलाउँ बेलाउ फिराउँ धनी मजु की वान पेला
उँ बेलाउ फिराउँ नारी माजु को वान पेलाउँ

बेलाउँ: फीराउँ· लाटामै जु· वान पेलाउँ बेला उँ: फीरा
उँ: ओसी भाजु: की·वान पेलाउँ: बेलाउ· फीराउँ· लटे भा
जु· की· वान पेलाउँ: बेलाउ: फीराउँ: लटेमै जु· की·वान·
पीलाउँ: बेलाउ· फीराउ: लटे सैउ की: वान पेलाउ· बे
लाउ फीराउँ: लाटीसैजु की वाचा: ॐ अजिमाराको
कि·वान पेलाउँ: बेलाउ: फीराउँ: ॐ अजिमाडे की
वाचा· गुरुमाकी वान पेलाउ· बेलाउ· फीराउ गुरु
माकी वाचा· गुह्ये कालि वाचा: ॐ फ्रूं फ्रूं । उ· ल·
दो· फुजागनिना· २२।४।१४।६।

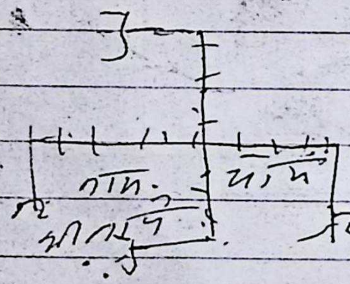

उंकी टेरी पजं कीटे स्वाहा
२२ जातकोद्ध पुड़े· चीताफे·
लीनो लधाकामा टाजिपे

नारीजगाउने

अहंकारो मनोबुधि चीतयेन: हुँरगतोजे: जवायु नभो तेजभूमि
चँचलने त्वंभू सीवद: कार्वि मसान जगाउमे मेगाकिवाचा
नारीजगाउने मंत्रकीवाचा।।३।। — —

मारीको वीचार २२

ओंग रोगाये नम: मारीको वीचारगर्ने युक्तिपुरुषको दाना स्त्रीको वाना
दुई नारी चड्का गरी त्यसको भये भुतादि लागेको जीनु·१ मलीन भये दे
वताको दोष होर वाना चड्का भये राक्षसको दोष हो ३ वाना मलिन
पेड लामसान लागेको ४ दुई माहिम भये देवताको दोस होइ दुवै रातं
र भये वोक्सीको अनुजीनु ६ चीसो भये अगौती लागेको जीनु ७ फीर
चीसो भीत्र गर्मि भये अंग वाटउठेको रोग लाभुवेथ्या जीनु ।।८ तल
माथी नहोडी एकै नास भयेको नागको दोष हो ९ सीताउ; सरीर भये
को जरो नभये को आकासे देवता लागेको जीनु १०।। दाना वाना मुकादि
नेकै लेनि को फुने कैवे वान नफुने कैवे धेरै वाने आगा को दोस हो ।।११
कैले पेट फाटने सोला दिने आकासे देविको दोस जीनु ।१२।। सीर्पे रोपे
हैगरी पेक्षे नासो पीरहो भने अर्को मोनी धा लागेको जीनु ।।१३ नारी चड
आ चड्का गरी तलमाथी ठाउ छाडी चल्छ भने दस विसं घडी भीत्र फाको
फहे· का·१४ गणा नछोडी चल्छ भने नोरै नरहा सफा हो का वप सवैवी
रामि नार्ई हेर्दा गोडाका नाडि पुडावरावर माथी जान लागेको छ भने एक पुह
र माजरहेछ ।।१६ नारी वरावर नी रितर चल्छ भने ढिलो मात्र सारै माथि
नभयाको वाहिका देवताको ।।१७ नारी हेर्दा वोत्र्यतिमैत्री गवार्थ सरस्व
तिसै मो दृष्टगरी हेरनु· नारीदाना वाना लागछ तिआ दापसोना आउछ भ
ने गरी वापुवी गुरुको हो ।। नारी छुने नाई हेर्दा उतापर्हिमो स्वास चल्छ उनै को ह
नेनु उतै को पाउन वाउजु उने पहिला हातदा नाडिका नाडी ठहर्‍याउ हेर्नु अ
अनुभवसहीत गुरुमुख ।। ।। ।। ।। ।।

वीगार को औषधी २३

औलेचुक्रजरो १ गुंदराम्बु को चकना १ चीकोडके ये भी ग्रीवाके का पका
१ गुडरलपानु ।।

गर्भधारना करावे के औषधि

सोना) चांदि) तांबा) का भस्म बराबर मांगले मधुमे मिलाकर रज
न यक ४ दिन तक खिलावे गर्भधारना १।। नागेश्वर का फुल
का चुर्ण गाय का घिमे मिलाकर के खानादुध पिकर रतिकरे ऐसे होय
असगंध, गुर्वसजीखार) बराबर काथ अष्टावसेष कर ४ दिनमे पिव
ऐसे ही सुंठ. मरिच. पिपर. नटकटैया. केसर. सब भाग चुर्ण कर गा
य के घिमे मिलाकर ४ दिनमे खाकर पुरुषसे भोगकरे ऐसे ४
पुष्यनक्षत्रमे) लछुमनाजडी के पिड़ उखाड केली आर चुर्ण कर के
गायकी घिमे मिलाकर पुरुष के हाथ से लेकर ४ दिसे) दंतक खाय
दुध भात खाय तो गर्भ धारना हो ।।५ बीजो मेउ का जड़ ४ कसेर गा
ये का दुधमे मिलाकर. पकाना. और गाई का घि मिलाकर ४ दिसे) खि
लाना. ऐसे हो ।। ६ ।। सफेद कागुनि) गभोनी गाई का दुध के साथ
पिसके ४ दिसे) तक खाकर ओषध व मैथुन करे तो अवस्य गर्भ धार
ना हो ।। ॐ मोहनी मैय जगाउ फिराउ ३३ सेता नरसीं हकावाचा
लो फिराउ देवी कालवा चाले फेराउ मोइनि फिराउ हिमालू रा
जा की वाचा फिराउँ) समुदु की वा चाले मोइ मि मन्त्र जगाइ
फिराई अग्नि माहाली भस्म कराई २७ ना मोहनी

नाडिज्ञानप्रकरणम्

श्री गणेसाय नमः ।। श्री धन्वन्तराय नमः

पुर्वो दक्षिण हस्तस्य. स्त्रीया वाम करस्य च:
अंगुष्ठ मुलस्था या नाडी परीक्षत भिषग्वर: ।।
पुरुस्य. पुरुस्को. दक्षिण हस्तस्य. दाया
तथा. स्त्रियास्त्री को वाम करस्य. वायांगतथा:
अंगुष्ठ मुलगा. अंगुष्ठ मुलस्था. नाडी. नाडिकन:
परिक्षत परीक्षागार. भी षग्वर. सो वंभ सक्चावे सकहा ।।१।।
स्थिर ची तो जो रोगस्थ सुखासीन प्रसन्नधी ।।
नाड़िज्ञान समर्थस्या दित्पादु पर मर्थय ।।
थीर चीत्त भसक्का नीरोगी सुख मा रहने बुद्धि मानु:
यस्ता वैदे नारी के नै समर्थ हुन्छ भनि कुला रेखि:
गरु आग्या गर्छन् ।।२।। पित म घ र्थ वलात्मा
मलमुत्रादि वेगयुक् ।। नाडिज्ञान समर्थस्या:
लोभाक्रान्तश्च कामुक ।। व मदप्पूने. चे चल:
मन भयाक्रा वरावर मलमुत्र त्याग गर्ने लोभि:
थाके का. वैदे नाडि ज्ञान मास मर्थ छैन:
जानसक्दैन ।।३।।

ॐ त्यत्र मुत्र पुरीषस्य मुखासिनस्य रोगीराग ः।
अत्ताजानुकरीस्यापि नारी सम्यक् परीक्षयेत्॥
त्याग गरेको मल मुत्र जानु २ धुराका विज साहत:
राखेर सुरक्ले वहाँ रोगी नारी नाडि या प्रकारको:
परीक्षा गर्नु॥४॥ तचेसु यासुषे दुखे काय कायस्य:
पैडीतैः से घस्नात्स्य भुक्तस्य क्षुदतिष्यातप संलीन॥
प्रातसुप्तो पीतस्यापि भि तस्य पथीकस्य च ॥
व्यायामश्वान्त देहस्य सम्यक् नाडिन बुधेतो॥५
तचेसु यासे सनारिका चेष्टाले कायस्य पैडीतै:
सरिकार्प ईत भयाधावै प्रले सुखेनरोगी दुख:
रोगी भनि ज्यैजानु सखड्मा तेलमर्दन गरेको॥
भुक्तस्य अघाये को क्षुतत्सा भोक पास्य:
लागेका तपासी लिनत परस्या गर्ने को: प्रातः सुप्तो:
पीत: प्रातकाल मा सुतेर उठने। वी नीकै को भीतस्य:
डराया को पथीकस्य बाटा माडी हीधाके काके:
व्यायामश्री तदेहस्य कसरत गर्ने को सरिरको नाडि:
जो सम्यक यथार्थ नवुझ्ने बुधेत॥५॥

० धातिकावां पति ब्रह्मः पैतिकायाश्री शुलध्रीकः
श्लेस्मीकाया पति विष्णु वदन्तीति विपश्चित॥
वातिकायां: वात सम्बन्धी मा मलीक भएकि:
अधिदेवता ब्रह्मा हु। पित सम्बन्धि को आदि देवता:
शुसुल लि सिव जी मालिक कफ सम्बन्धी नारी मा:
अपति श्लेष्म मा मालिक विष्णु हुँ भनि जानु॥६॥
० वातीकायापति वायु पैतिकाया दीवाकरः
श्लेस्मीकायां पति चन्द्रो वदन्तीति मुनिश्वर: वायु सम्बन्धि:
नारि जो छ सो मा लीक वायु देवता पित सम्बन्धि नाडी को
मालिक सुर्य कफ सम्बन्धी नाडी को मालिक:
चन्द्र देवता हु भनि मुनीश्वर हरु भन्दछन्॥७॥
० ~~[illegible]~~ वाताधिका भवेत् नाडि: प्रवेक्तात जनितले॥
पित व्यक्ता मध्य मायां तृतीयां गुलीके कफे॥
वायु अधिक भएको नाडि: ~~[illegible]~~ तरजानि:
अंगुलामा पित अधिक भएको नाडि: मध्य अगुली
मा कफ अधिक भयको नाडि तृतीयांगुले:
अनामिका अंगुलामा छ: भनी जानु॥८॥ ।।

तर्जनी मध्यमा मध्ये वात पित्त भवेत्स्फुटं ॥
अनामिका च तर्जन्यां व्यक्ता वातकफे भवेत् ॥
वायु र पित्तको नाडि तर्जनी औंगुल र मध्यम
औंगुल विषम स्फुट भएर प्रकट हुन्छ
वायु र कफको नाडि अनामिका औंगुल
तर्जनी औंगुलका मध्य विषम व्यक्त हुन्छ ॥ ९॥
अनामिका मध्यमा मध्ये वात पित्त भवेत्
स्फुटा ॥ अंगुलि त्रितये प्रिठात् प्रव्यक्ता
सान्निपातिक ॥ अनामिका र मध्यका मध्य वि
षमा व्यक्त भयो भने वायु पित्त भनी जान्नु
तीनै औंगुल व्यक्त हुन्छ भने सन्निपात
भनी जान्नु ॥ १०॥
नाडी धत्ते मरुत्कोपे जलौका सर्प
योगतिः कुलिङ्ग काक मण्डूक गति पित्तस्य
कोपतः मरुत कोपे वायु कोप भयो भने जलौका
जुका सर्प हीडे झैं नाडि चल्छ नाडी चल्छ
पित्तस्य कोपतः पित्त कोप भएमा कुलिङ्ग
काक चराका मंडक भ्यागुता को गति
हीडेको झैं धत्ते चल्छ ॥ ११॥ [illegible]

हंस पारावत गमनं धत्ते श्लेष्म प्रकोपतः ॥
लावतित्तिरि कवर्ति गमना सन्निपातका ॥
कफ भएमा हास परेवाको हीडे झैं चल्छ लावा तितर
वटाइ हिडेको जस्तो चल्छ भने सन्निपात हुन्छ ॥ १२॥
कदाचित् मन्द गमना कदाचित् वेगवाहिनी ॥
द्विदोष कोपतो ज्ञेया हन्ति च स्थान विच्युता ॥
कैले मन्द गतिले कैले वेगको गति छ भने दुई दोष कोप
भयो भनी जान्नु नाडि ले ठाउँ छोडी हिँड्छ भने मर्ने पनि हुन्छ ॥
वात व्यक्त गति नाडी पित्त चञ्चल लागति ॥
कफ मन्द गति नाडि मिश्रिता मिश्रीगतस्था ॥
वात बाट उठ्दा वांगो गति हुन्छ पित्त बाट उठ्दा
चञ्चल हुन्छ ॥ कफ बाट उठ्दा मन्दगति हुन्छ मिश्रित
भएपछि मिश्रित हुन्छ ॥ १४॥
सर्पादि गति का नाडी काकादि गतिका तथा ॥
वात पित्त भयो मिश्रा प्रवदन्ति मनिस्वर ॥
यो सबै देहरु जो छन् नाडीको परिक्षागन मा सर्प आदिको
गति झैं र काक आदी को गति झैं चलेछ भने भने
वात पित्त मिश्रित रोग भनन बताइएको छ ॥ १५॥

० इंडशुकगतिनाडिकदाचित् हंसगामिनि
कफवात भयोमिश्रा प्रवदन्ति भीषज्वर ॥
यसैवैदहरु जो छन्से नाडिको परिक्षण गर्नामा
सर्प आदिको गति हैं कहीले हांसको गति हैं चले
छ भने कफवात मिश्रीतरोग कन्वता उछ्छे न् ॥१५॥
० मण्डुकाद्दि गतिनाडि कदाचीत् ध्वंसगामिनि ॥
कफ पित्त भयोमिश्रा प्रदंति भीष ज्वर ॥
यसैवैदहरु जो छन्सो नाडीको परिक्षण गर्दा भ्यागुतुको
गति हैं र कैले हासको गति हैं चलेछ भने कफ
पित्त मिश्रीतरोग वता उछन् ॥१६॥

० ठीत्वा ठीत्वा धमानियः सास्मृता प्राणनाशिनि ॥ अतिक्षीणा च सीता च जीवहंकीतथैव च ॥
नाडि रोकिरोकिकन चल्छ भने प्राणनाश गर्ने हुन्छ ॥ अत्यन्त छिन्नापनि सितापनि आतिदेखीन्छ
भने प्राणनाश गर्छ ॥१७॥ सरीर सितल भएपनि
नाडि चैं रन्तादा भवेत् ॥ जोर संज्वरगतं तस्य जामि
या भीस मृत्त मं ॥ जस्को सरिर चीसो नाडि उस्न
हुन्छ भने तस्को ज्वर अन्तरगक्षित भनि यसै
भएकाकै वैदले जानु ॥१८॥

० जोरैखेन् जोरको पेत्त ध मानियाः कोस्नावेदः
इतिस्मृता ॥ जोर कोप भएमा नाडी जो छसो
उस्न वे पाको स्मृता हुँन्छ ॥१९॥
० कामक्रोधा वेगवाहाः क्षि याचिंता भयप्लुता ॥
स्त्री कप्रुराभवे उसग गुरुधिक्का या मागारि परिः
मैथुनई छा भयमारि साएमा वेगको नाडि सैको
चपेरमा दर लाग्दा छिननारी हुंन्छर तको घभएमाः
तातो उराउ भएमा मारिलो हुँन्छ ॥२०॥
० मन्दाग्नीक्षीणधातुश्च नाडि मंन्दतरा भवेत् ॥
लघ्वी वहतीदिप्ताग्ने तथाबलवतिस्मृता ॥
अगानि मंन्द धातु छिन्न भएमा पस्को नाडि मंन्द हुंछ
अग्नी दिप्त भएमा हलुका नाडि हुंन्छ बलवान् भएमा
स्मृत हुन्छ ॥ ।।। । ।। ।। ।। ॥२१॥
० सुखी नस्यास्थीरा ज्ञापा तथा बलवतिस्मृता ॥
धुर्तुभिन्व पलातस्यो स्या जी पूस्योस्थीरा भवेत् ॥
निरोगीको नाडि स्थीर हुन्छ तस्थै वलियाको पनि हुंन्छ ॥
भोकाएको चैचलअग्धाएको थीर न भएको हुन्छ ॥२२

० अंगे घठसिरस्ताषो सितातन्ह साघारय ।।
येतानि यस्यची हुनि सकाल जोरउचेते ।।
आरुमाव सिना सोरज्ञत्येतताली हातपाउ:
सितल वीसो जस्कोयस्तोलक्षरणभयोभने पसला.
ईकाल ज्वर भनि कुहिन्छ ।। ।। ।।।।२३।।
विसादाहो भवेदस्य: दिवा सित च जागती ।।
कफ पुरित कैरठस्य तस्य मृत्यु भदिस्यति ।।
जस्को घाटिङ्कफ हुन्छ दिनमा आज त जीसोहुन्छ:
घाटीपनि कफले भरी सकी छ भने तस्को मरनु हुन्छ
० अर्ने लोयं तीणि तं च पीतं या [illegible] निकफ गृहे ।।
कफ कठ मात्मीती जीवनं तस्य दुर्लभं ।।
वायु पित का स्थान मा जांछ भने पीत कफ
के वर मा जांछ भने कफ घाटि मा आई वस्छ
भने त्यो वाचन दुर्लभ भनी जान्नु ।। ।। २५।। शुभम्
सम्वत् २०११ साल भाद्र सुदि एकादसी रउगते रोज ४मा
लीखीते तेसनी प्रसादमह चौग्रख ।। चा) वली पुरेल
ॐ गुरु आग्या ।। ॐ मारुतम मंगल मंगल आजार च्य.
नमान मानयो स्वाहा ।। ११ धा. दमवए वायुय मंत्र ।।

गरम पीसाव फेरनेमा
गेजा ४ धनिया ४ गोरखु ईसबगोल ४ पेसलाई
कुटि ख्याउन बनाई १ मोना अठउ ने माटाको गडेलुमा २४ धीउ
भोजाई चीनि सो मि लाई वेहान खाली पेट मा खाने मा आन

काईमु न आउदा अद मन प्रेत पोदाय गगोमालि
काईमैमी रं व्यादिनाई काटने ।।
ॐ करे गुरु करे गुन केतेवा करे वीवेताल के मोस्फेम.
छुकाइ. एक्लसको चन कपार के गुरुको लक्ष्मी मेरीमा को
ॐ ईश्वर कोनाचा ता ता ता नन गाका गा [illegible] ग्राव [illegible]

ॐ हुँ ठः ठः स्रो क्रोध ही
ॐ हुँ ठः ठः क्रोध प्रसमन हुँ हुँ हुँ ल्कौं स स स्वाहा ।।
ईसपे को मान्छे का अगाडि जाडा ईफोमेचजाईन मत्माको
पानी अगाडि जानु क्रोध सान्तो हुन्छ
श्री ३ गुरु व्य नमो: असस चिचो चो हुं फट् स्वाहा ।।३) गीगाजलज
पातंगके अरीनचावया ।। ।।ॐ अधिगत विकपरोम वि
नायकानो हुंमू फट् स्वाहा ।। घाय आसत इका: पका घुस्यौ टंबुका
पानी चीना घाइ अट्टोंया ।। ।।ॐ गुरु आग्या सारिये आपरंभु
तां: सवभुतानां विघ्नविनायकानां आंजो कोसं मांकुर स्वाहा ।। घा
तेलाकुको पेटमा जी उराघसन गुइति नाम ।।

१ ॐ तारे तामरे माझ्ता रें कमल दारें भोगतरे श्री न रसीद्ध की आग्या ईफट् स्वाहा धा१

२ ॐ सा हनीवात गरोको पाति कईश्वरी डुजु जोगिनो हूँ फट् स्वाहा धा १०८ सी- दुरम लाउने मेर

३ ॐ फूल फूल स्वनतेरो जोमन मेरो मालीप्यारो ओम नहै (नाय) तेरो मोपी: हासीधुसि बेली स्वाहा. स्वगत मेरो भरतीमा हादेव गोरा पारवति कोवा चा ईफट् स्वाहा. धी २८ नाम परसीफूल

४ ॐ पाल कुमारी मोहनी फकी फकी ईफट् स्वाहा धा १ नाम राशीजैनै मोहनी फोराउने

५ ॐ जात दुना फीराउ गरुकी शक्ती मेरो भक्ती गोसैंकी वाचा ॐ अरुवर वान फिराउ वज्र वाना फि ईसहठ कर वानफिराउ. वान फिराउँ संदु वै नाफिराउ ठोकरि भीरी धन वाकुल को वीरो छ धाना गर्न ईश्वर माहादेव कोवाचा. वान वान आ-चीई फट् स्वाहा. धी २१:१६३ वान वनारसक कोउने

३ कालो कपडा वधको मा कल स आ धीत स कपडाको

७ टीका लाई पुजोगरी दी राजीलाई हात कल स ताराको कोयाधि

७ टीको को गुल्लवेरनेर फल तमाइ ली- ठेवाना गाउँ मेतु

६ ॐ कोमर स्वाहा १ धा सीध्धाई. ने. ॐ दि मोजी दाम स्वाहा कथा.

(ॐ केते रेस पस्वाहा १ पट फ ॐ ह्रिं नमस्वाहा ३ धा १०८ गराजी दीम मा- गर्भ धारनको १०८ ॐ जीश्री नारी के छौ श्री दे ग्यु रगर्भ छ सुख पाये भगईतार. कालीय श्री कालके पठाए स्वाहा. धा १०८. औसधी कालोला.वा का लोतिल ॥ ३ कागती ॥ धू ॥ मह ॥ सहर. वगर आमुकूल सनुकुफीजा रगत काउली काइाइ पेरवाको व श्री १ सके ता जगवर ओवधी मीलाई र जमस्का ४ दि क्रो दि ३ टाम खानेर दि २६ दे

११ ॐ रि धी चीन्दैन जगत मोहनी पृथ्वी विखेरियो दि आउ आरुदेखतारी सले हामिदेखता हासिक सि मु सेहो आउ सात डाडा पर भयेपनी धाते डाडा पत्ता ल आसो हि कुली मा फा फर र वर आउँ नौ को ठा भीव जसेता पनि नौव ताल चा फेरि कुरु जोगिनी कोपाचा लो लालु मोहनि जगाउँ लेउ. दारेव न कालि कावा चाल लेला लो मोहनी जगाउ पारवति माहादेव साछि-- -- ---रा रखा. लाल मोहनी जगाउँ जगाईलेउ. आजका तिन दि देखी सात दिन भीत्र चार जना साछि रा रखा.

लाल मोहनी जगाउ श्री गुरु वाचा ई फट् स्वाहा धी १०८

१२ ॐ आदेस सै वीर वीर मसान जगाउँ आल मसान जगाउँ अग्नी मसान जगाउँ रगत मसान जगाउँ अकरस मसान जगाउँ सात धरति पाताल जगाउँ मेरी गुरु की वाचा ई फट् स्वाहा १०८ घी आकुलाई [illegible]

१३ ॐ नाग राजा उठाउ नाग रानी उठाउ मीली मिली अष्ट काल नाग राजा उठाउ काली नाग सेती नाग उठाउ [illegible] उठाउ [illegible] लागी जाई फट् स्वाहा घी १०८ [illegible]

१४ ॐ सिन्दुर गानि सिर कुमारी [illegible] स्वाहा ह्रैं ह्रौं नमः स्वाहा [illegible] धसी वध्ये [illegible]

१५ ॐ चारी कुने फुकाउ चारै चौदीसा फुकाउ ईश्वर महादेव की वाचा ले फुकाउँ ईं फट् स्वाहा घी १०८ [illegible]

१६ ॐ ओसीर बाधौ ॐ [illegible] बाधौ ॐ [illegible] बाधौ ॐ [illegible] ईश्वरी महादेव गौरा पारवति की वाचा [illegible] फट् स्वाहा घी १०८ ऐं ऐं

१) ॐ झारी जमुना पारि जमुना जल धारा पानी [illegible]

[illegible]

१८ ॐ [illegible] स्वाहा [illegible]

१९ ॐ चौसठि ज्ञान चलाउँ [illegible] चलाउँ गुरु की वाचा ले चलाउँ ई फट् स्वाहा [illegible]

[illegible]

[illegible]

२० ॐ नमः स्वाहा ह्रीं फट् स्वाहा [illegible] पाँच दाना [illegible]

[illegible]

ॐ काली [illegible] चढाउँ [illegible] विद्या [illegible]

[illegible]

[illegible] फट् स्वाहा [illegible]

२२ ॐ सिन्दुर [illegible] सिन्दुर [illegible] ईश्वर महादेव पार्वती की वाचा [illegible]

२३ ॐ [illegible] दाता गणेश पति [illegible] ईश्वरी [illegible] स्वाहा [illegible] १०८ [illegible]

[illegible] फट् स्वाहा [illegible]

[illegible]

[illegible] १०८ [illegible]

[illegible]

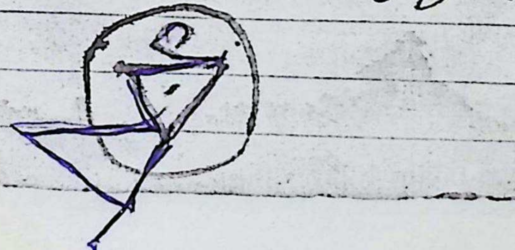

॥ दादू राम नाम के धागे आवे ही तो भक्त
आचम्य॥ (संकल्प) अद्येत्यादि० गोत्रोत्पन्न ... सर्वारोग्य
परचक्र भय निवारणार्थं संध्या हवन मैं करोम्ये॥
अग्नी ध्याते॥ ॐ चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे
सप्त हस्तासो अस्य॥ त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीती महो दे
वो मर्त्यां॥ आवाहन॥ आसन चन्दन यज्ञोपवीत पुष्प
न.म॥ नमस्कार। मुखे ये सर्व देवानां हव्य भुक् कव्य भुक् त
था। पितॄणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय स्वाहा १०८॥
ॐ क्लीं कुँ क्लीं कुँ क्लिं कुँ ॐ स्वाहा १०००
अथ [illegible] लमरपराँ॥ पीत देव गोत्र नित्य पूजा मादाप पापोद
दंपत्रा मार्थतो देवी आराधनात्मा॥ पानी फूंके बाउ के
~~ह्रूँ ॐ अँ अँ~~
ह्रूँ ॐ ॐ प ॐ प चि चि ह्रीं ह्रीं लाभ युवनादि का
कालिकायै स्वाहा। प्रो में चक्र कीति न या ... ज्वर रोग
दिपमको को ठा नो अपक्व लाम रखे दि पिड का ... गत्त है
को काढ़।

ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य भगवान् ऋषिः
बगलामुखी देवता मम संनिहिता नौ दुष्टानां विरोधी
नां वाक् मुख पद जिह्वा बुद्धीनां स्तम्भनार्थे श्री बग
ला मुखी वर प्रसाद सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥
ॐ ह्रीं अंगु० ॐ बगलामुखी तर्ज० ॐ सर्व दुष्टा
म म० ॥ ॐ वाचं मुख पद स्तंभये अना० ॐ जि
ह्वां कीलय क नि ष्ठि० ॥ ॐ बुद्धीनां सद्ये ॐ ह्रीं स्वा
हा ... तर० ॥ एवं हृदयादि॥ (शाप विमोचन)
ॐ १०॥ ह्रीं ॐ स्वाहा १०॥ ॐ जूँ साम रुद्र शाप मोचये
... ॐ १०॥ ॐ नील कंठ दुर्गासा शाप मोचय २ स्वाहा
ॐ ह्रीं बगले रुद्र शाप मोचय २ ह्रीं ॐ स्वाहा १०॥ गद्देशी॥
ॐ ब्रह्मास्त्रादि विद्या के स्तंभकाय श्री महीते मे बगला
प्रचंड फल १०॥ मूल जाप १०००००॥
सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्ला
सिनीं। हेमाभां गरुचिं शशांक मुकुटां संसुक चंपक
स्रुजां॥ इसो मुद्गर पास वद्ध रसनां संविभ्रती
भू परां। व्यापी प्राणी बगला मुखी त्रिजगतां संस्त
म्भिनी चीन्तये॥

श्रीगणेशायनमः

(५६)

अथ सन्ध्या लेसी गुरु मन्त्र लिखते गुरु मुख रूपना आदेश

१ ॐ औरकंमेचौ रकौ कंमे मोर सिंवासंगाकंमे सोरे सी
वांसनी कंमे वाहणमिधुक आसनमूबिजोगी कंमे खवेरे
कंमे वधरकंमे अपूनूसचु जाति कंमे ईश्वर कृष्ण को
सतलेसत सपूवस्या ॥ फु० १॥ २ अथ लेसी सिन्दुर आदि
२ ॐ सिन्दुर सिन्दुर [illegible] पढिवरी सेथ शाकरि कुमार देवि
लाग पाति सिन्दुर पञ्चलाल मोहनि नाफ लाके टोपे कैलास श्री
लाई लागसती सिन्दुर मोहनि गौरा पार्वति काचा चा
लेलागपीति पञ्चलाल मोहनि ॥१॥ मोहनी गुरुमुख [illegible]
३ जसे नुबाधि जैगु जैसे गुरु केपे के गुरु गाई देवकी या [illegible] लागी
मैसी देवि पारमा लागी वारि देवी डोरी लागी वरपुर सदे
रियरू श्री लागे बाहुसति गुरु लागि लाल पञ्च मोहनि [illegible]
नारसी विष्णु फुला बापु रूप सद चीना बाडले सद सती लाई
गौरा पार्वती काचा चालेलागसती गुरु मोहनी ॥१॥
ॐ चंदन घोटि घोटि सीरलगाउनी मेरो श्वास माइ राउ
ईश्वर की आज्ञा [illegible]
ॐ अंकासे मोहनी पताले मोहनि धरति मोहनी इन्दु नी
गोहि धमजीकी आज्ञा ज्या फसनाकोमे रोचीन वाधि ई
ईवाचा ॐ [illegible] कासै धरती सादि पताले रीपध सारे
चंद्र सुर्ये गुरु सादि फसनी लो मसंजे कीलो जो [illegible]
वाचा ॐ फू ३ स्वाहा २१ [illegible]

श्री गणेशाय नमः
[illegible]
रोगा वाक [illegible]
[illegible] कुलदेवता
[illegible]
[illegible] आका [illegible]
दोत

[illegible]

[illegible] १ [illegible] १ [illegible] १ [illegible]
डोलो १ चीराईतो १ [illegible]
[illegible] १ [illegible] पात १ [illegible]
[illegible]
[illegible]

पेन्ध को [illegible]

[illegible] १ [illegible] १ [illegible]
[illegible] १ [illegible] १
[illegible]
[illegible]